International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 9 Issue 2, Jan-Feb, 2021, Impact Factor: 7.326

विश्व में हिन्दी की स्थिति

श्री धर्मवीर

सहायक प्राध्यापक, चौधरी बंसी लाल विश्वविद्यालय, भिवानी

Author Email id-dharamviraryavart@gmail.com

जिस देश में गंगा बहती है, उस देश का गौरव गान है हिन्दी।
राम और कृष्ण की जो अवतार भूमि, उस देश का वरदान है हिन्दी।
गौतम, गाँधी, नेहरू की जो कर्मभूमि, उस देश की पहचान है हिन्दी।
तुलसी, कबीर, नानक की जो धर्मभूमि, उस देश का अरमान है हिन्दी।

भाषा अभिव्यक्ति का सर्वोत्तम माध्यम है, यह अभिव्यक्ति आमजन की अस्मिता से लेकर राष्ट्र के आगत भविष्य निर्माण के लिए भी हो सकती हैं। इसलिए भाषा का प्रश्न केवल भाषा तक सीमित नहीं है यह अपनी पहचान का प्रश्न है। भाषा किसी भी देश की आन, बान और शान होती है। भाषा ही वह तत्त्व है जो मनुष्य को समाज से, समाज को राष्ट्र से, राष्ट्र को विश्व से जोड़ती है। भाषा के अभाव में मनुष्य इतिहास और परंपरा से कट जाएगा। सम्पूर्ण सृष्टि उद्देश्य हीन हो जाएगी। इस दृष्टि से हिन्दी विश्व की उन श्रेष्ठ भाषाओं में से एक है, जिसके दामन में कई भाषाओं एवं सभ्यता, संस्कृतियों के अंग फल–फूल रहे हैं। इस हिसाब से हिन्दी विश्व की सर्वशक्तिशाली भाषा है। महात्मा गाँधी जी भी यही चाहते थे कि ''साहित्यिक रूचि रखने वाले युवक–युवतियाँ अंग्रेजी और दुनिया की अन्य भाषाएं खूब पढ़े लेकिन मैं यह हरगिज नहीं चाहूंगा कि कोई हिन्दुस्तानी अपनी मातृभाषा को भूल जाएँ या उसकी उपेक्षा करें या उसको देखकर शरमाएँ, यह महसूस करें कि अपनी मातृभाषा के जरिए वह ऊँचे से ऊँचा चिंतन नहीं कर सकता है।''[1]

हिन्दी भारत की सबसे अधिक बोले जाने वाली भाषा है। हिन्दी केवल भारत की ही नहीं, बल्कि अन्य कई देशों में भी बोली जाने वाली भाषा है। भारत के जन–जन के मुख पर आज हिन्दी रची–बसी है। आजकल दक्षिणी भारत में भी हिन्दी अपने पाँव बहुत तेजी से पसार रही है। जिस प्रकार भारत में हिन्दी का प्रभाव बढ़ा है, उसी प्रकार विश्व के अन्य देशों में भी हिन्दी का प्रचार–प्रसार हो रहा है।

जनसंख्या के आधार पर आज संसार में हिन्दी के बोलने और समझने वाले सबसे अधिक हैं। इसलिए सबसे अधिक बोले जाने वाली भाषा हो चुकी है।हिन्दी प्रशासन, विधि, चिकित्सा, न्याय, शिक्षा, तकनीकी, आदि विभिन्न क्षेत्रों में सशक्त माध्यम बन चुकी है। जीविकोपार्जन, व्यवसाय, खेल, जगत, सिनेमा, विज्ञापन, दूरदर्शन व कम्प्यूटर,इन्टनेट के क्षेत्र में अपना परचम फहराया है। वह केवल क्षेत्र विशेष की भाषा नहीं है, जनसंख्या के सशक्त माध्यम के रूप में लोकमानस के पटल पर अंकित हो गई है।

हिन्दी केवल भाषा नहीं है अपितु आचार संहिता भी है। संस्कृत से जो उसे संस्कार मिला है, उसका आधुनिक विकसितस्वरूप हिन्दी है, वहीं हमारी सामाजिक संस्कृति की संवाहक है और संस्कृत की उत्तराधिकारी है।

हिन्दी का विस्तार भारत के पूरे विश्व में हो रहा है। संसार में तीन भाषाएं प्रमुखता से बोली जाती हैं– हिन्दी, अंग्रेजी और चीनी। अगर हम इनको क्रम में रखें तो–चीनी, अंग्रेजी, हिन्दी। लेकिन अबवह दिन दूर नहीं है कि एशिया की भाषाओं में हिन्दी प्रमुख हो जाएगी और इसी के साथ विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा हो जाएगी। हिन्दी फिल्मों ने अंतर्राष्ट्रीय जगत में हिन्दी को लोकप्रिय बनाया है। संसार के कई देशों में हिन्दी की फिल्में देखी जाती है और पसंद की जाती है। हिन्दी फिल्मों के गीत तो विदेशों में व्यापक स्तर पर सुने जाते हैं, इस कारण से भी विदेशी लोग हिन्दी सीखने में रूचि दिखाने लगे हैं। आज हर ओर हिन्दी का जयघोष सुनाई पड़ रहा है। शायद हिन्दी के इस प्रबल फैलाव के कारण जुरासिक पार्क एवं टाइटैनिक जैसी विश्व प्रसिद्ध फिल्मों के निर्माताओं को इन फिल्मों का हिन्दी में अनुवाद करना पड़ा। डिस्कवरी जैसे ज्ञानदायी एवं विश्वव्यापी चैनल को भी लगा कि यदि उसे भारत में पांव पसारने हैं तो चैनल का हिन्दीकरण करना ही होगा। इस संदर्भ में यह कथन उल्लेखनीय है– 'मनोरंजन उद्योग के ग्लोबल बाजार ने बताया है कि बालीबुड की फिल्मों और गानों की धुनों को जो लोग भाषा की दृष्टि से नहीं समझते, वे भी उसकी संस्कृति संरचनाओं के प्रभाव में रहते हैं। वे स्पेनिश, फ्रेंच, जापानी या चीनी बोलने वाले हो सकते हैं, मगर हिन्दी फिल्में पसंद करते हैं। जाहिर है, कुछ हिन्दी शब्द इस बहाने उनके पास रह जाते हैं। अरबी–फारसी बोलने वालों की दुनियां में भी हिन्दी अनजानी नहीं है। मनोरंजन चैनलों ने वहां भी हिन्दी को फैलाया है।'[2]

विश्व के अनेक विश्वविद्यालयों में हिन्दी पठन–पाठन की व्यवस्था है। हिन्दी के प्रचार–प्रसार में प्रवासी भारतीयों का भी बड़ा योगदान है। अनेक विदेशी विद्वान हिन्दी में साहित्य सृजन कर रहे हैं और कई देशों से पत्र–पत्रिकाएँ भी हिन्दी में प्रकाशित हो रही हैं। इनमें मॉरीशस, फीजी, त्रिनिडाड, आस्ट्रेलिया, ब्रिटेन, कनाडा, सूरीनाम और ओसलो नार्वे का योगदान सर्वाधिक है। प्रवासी साहित्यकार विश्वकवि प्रो. हरिशंकर 'आदेश' ने हिन्दी की पताका को विश्व के अन्य देशों में फहराया है–

समुद्र पार भी बसता है भारत देश,
हिन्दी को समृद्ध करने, वहाँ जो हैं। विश्वकवि 'आदेश'

जापान के टोक्यों विश्वविद्यालय के विदेशी अध्ययन विभाग में हिन्दी के अध्ययन व अध्यापन का प्रचलन दीर्घकाल से रहा है। यूरोप और अमेरिका में हिन्दी का प्रचलन है। अमेरिका में हिन्दी का परचम अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी समिति न्यूजर्सी ने भी लहराया है। वहाँ हिन्दी का नया सूर्योदय हुआ है वेस्टइंडीज के त्रिनिडाड–टौबेगो विश्वविद्यालय में हिन्दी चेयर स्थापित है। हिन्दी के माध्यम से प्रवासी भारतीय अपने विचारों का आदान–प्रदान करते हैं। हिन्दी भाषा ही नहीं अपितु जीवन पद्धति का नाम है। संसार में लगभग 6000 भाषाएं, बोलियां, जनपदीय भाषाएं, प्रान्तीय भाषाएं बोली जाती है। हिन्दी का विस्तार भारत के बाहर लगभग पूरे विश्व में है। मॉरीशस, सूरीनाम, फिजी, त्रिनिदाद आदि देशों में हिन्दी जानने व बोलने वालों की संख्या ज्यादा है। फिजी में वह फिजीबात, सूरीनाम में सरनामी तथा दक्षिण अफ्रीका में नैताली के नाम से जानी जाती हैं। नेपाल भारत का पड़ोसी देश हैं जिसके तराई क्षेत्र में हिन्दी तथा उसकी प्रमुख बोलियाँ–भोजपुरी, मैथिली, मगही, अवधी आदि बोली जाती है। अमेरिका, ब्रिटेन, न्यूजीलैण्ड, नार्वे, डेनमार्क, थाइलैण्ड, इण्डोनेशिया, कम्बोडिया और खाड़ी देशों में भी हिन्दी बोलने

वालों की संख्या बहुत अच्छी है। चीन, रूस और जापान के विश्वविद्यालयों के हिन्दी–विभाग में हिन्दी पढ़ाई जाती है। टोक्यों विश्वविद्यालय के पुस्तकालय विभाग में भारतीय भाषाओं की करीब 50 हजार पुस्तकें हैं। ओसाका विश्वविद्यालय के हिन्दी–विभाग में सैंकड़ों छात्र–छात्राएं हिन्दी पढ़ रहे हैं। दक्षिण अफ्रीका में भी हिन्दी का प्रचार व प्रसार बढ़ रहा है। संसार के लगभग 175 देशों में हिन्दी बोली और समझी जाने लगी है।[3]

विश्व के अनेक देशों में विश्व हिन्दी–दिवस, विश्व–हिन्दी सम्मेलन और विश्व पुस्तक मेले हिन्दी के प्रसार के शुभ लक्षण हैं। इन सम्मेलनों के उद्दश्य में हिन्दी को अंतर्राष्ट्रीय मंच पर विश्वभाषा के रूप में प्रसारित करना है।भारत में नहीं बल्कि विश्व पटल पर हिन्दी आज अपना प्रभुत्व स्थापित कर रही है। जब हम वैश्विक परिदृश्य में हिन्दी की पड़ताल करते हैं तो हम पाते हैं कि हिन्दी आज वैश्विक भाषा बन गई है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् यह विश्व की तीसरी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा थी, किन्तु भूमण्डलीकरण, उदारीकरण, वैश्वीकरण, बाजारवाद एवं संचार क्रांति के कारण यह दूसरी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा बन गई है। एक सर्वेक्षण के अनुसार 'इंग्लैण्ड की दूसरी भाषा हिन्दी है क्योंकि इंग्लैंड के शहर में बसे एशियाई लोगों की संख्या काफी है। वे चेहरे से पहचाने जा सकते हैं और आपस में हिन्दी बोलते हैं। भले ही वे बांग्लादेश के हों, पाकिस्तानी या श्रीलंकाई या फिर भारतीय हों।'' अतः हम कह सकते हैं कि इग्लैंड जैसे देश में भी हिन्दी भाषा ने अपना प्रभुत्व स्थापित किया है। हिन्दी यदि संयुक्त राष्ट्रसंघ की भाषा बनने की प्रबल दावेदार है तो सिर्फ इसलिए कि आज हिन्दी भाषी भारतवंशी पूरी दुनियां में छा गए हैं। गुलाम भारत से गिरगिटिया बनकर और आजाद भारत से रोजी–रोटी की तलाश में भारतीय कामगारों का व्यापक पैमाने पर विस्थापन हुआ। वे जहां भी गए अपनी भाषा और संस्कृति साथ ले गए। बंजर भूमि को कमर–तोड़ मेहनत से उर्वर बनाकर उन्होंने जो फसल लगाई, उसमें एक क्यारी हिन्दी की भी थी। कनाडा के हिन्दी प्रचारिणी सभा से जुडे डॉ. श्याम त्रिपाठी लिखते हैं– ''मैंने स्वयं अपने घर में एक हिन्दी स्थान बनाया हैं, जहां सिर्फ हिन्दी की ही पुस्तकें मिलती हैं। अंग्रेजी भाषा का लगातार 10 वर्षों तक अध्ययन–अध्यापन करने के बावजूद अंत में सच्चा सुख अपनी मातृभाषा और संस्कारों में ही मिला। यह अनुभूति करने वाला मैं अकेला नहीं हूँ बल्कि लाखों लाख अप्रवासी भारववंशी भी इसे महसूस करके तेजी से जड़ों की ओर लौटना चाहते हैं।'' स्पष्टतः हिन्दी के प्रति अप्रवासी भारतीयों का यह प्रेम किसी लाभ–लोभ से प्रेरित नहीं है बल्कि अपनी माटी और भाषा के प्रति उनकी आस्था और विश्वास का अनूठा प्रमाण है।

हिन्दी भाषा आज न केवल भारत की राजभाषा है बल्कि यह विश्वभाषा की आधिकारिणी है। हिन्दी जन–जन की वाणी है। कोई भी भाषा जन भाषा अथवा लोकप्रिय भाषा का दर्जा तभी ले सकती है जब उसकी लिपि में समानता में, उसकी लिपि वैश्विक हो, उसकी वक्तृता में समानता हो, उसमे सम्प्रेषणीयता हो, तभी वह लोकभाषा अथवा जनभाषा कही जा सकेगी। हिन्दी के लगभग 900 शब्द ऑक्सफोर्ड अंग्रेजी शब्दकोश में पहले ही हैं और जनवरी 2018 में लगभग 70 अन्य शब्दों को भी इसमें जोड़ा गया है। जिसमें मुख्यतः अच्छा, बापू, बच्चा, बड़ा–दिन, बदमाश, बेलपुरी, भिंडी, भवन, चुप, चटनी, चाचा, चक्का जाम, चमचा, चौधरी, छी–छी, चना–दाल, चना, दादागिरी, देश, देवी, दावा, दीया, दादी, दम, फंडा, गांजा, घी, गोश्त, गुलाब, जामुन, गुल्ली, हाठ, जै, सुग्गी, जी, जुगाड़, मिर्च, नगर, माई, नमकीन, नाटक, निवास, पापड़, पक्का, पूरी, किला, सेवक, सेविका, सूर्य नमस्कार, टाईम–पास, बड़ा, यार इत्यादि हैं। भारत एक उदार देश रहा, इसकी उदारीकरण नीति ने विदेशियों को बरबस आकर्षित किया है और यही आर्षवचन दुहराए जाते रहे हैं–[4]

अयं निज, परोवेति, गणना–लघुचेतसाम्।
उदार चरितानाम् तु वसुधैव कुटुम्बकम्।

हिन्दी की विश्व में स्थिति दिनोंदिन बढ़ती जा रही है, इसका एक बड़ा कारण है– बाजार। विश्व की दूसरी बड़ी आबादी वाला देश भारत आज सबसे बड़ा खरीददार और उपभोक्ता बाजार है। क्रय–विक्रय प्रक्रिया में भाषा की बहुत बड़ी भूमिका होती है। बहु–राष्ट्रीय कंपनियाँ जाने–अनजाने हिन्दी का प्रचार–प्रसार कर, वही है क्योंकि उन्हें मालूम है कि भारतवर्ष में यदि सामान बेचना है, तो हिन्दी को माध्यम बनाना ही पड़ेगा। बाजार से लेकर विचार तक अपनी सम्प्रेक्षण क्षमता के कारण हिन्दी का भूमंडलीकृत भाषा के रूप में अनायास प्रचार–प्रसार हो रहा है। वह विज्ञापन की भाषा बन रही है। यह हिन्दी का सौभाग्य है कि आज बाजारवाद की नियोजक शक्तियाँ उसके साथ हैं। अपने हित के लिए ही सही वे हिन्दी का दामन पकड़ने के लिए अभिशाप हैं और यही स्थिति हिन्दी के लिए वरदान साबित हो रहीं है। अपनी समावेशी प्रवृत्ति के कारण वह प्रिन्ट, इलैक्ट्रोनिक्स तथा मीडिया के साथ–साथ ब्लॉग और ई–पत्रिकाओं के माध्यम के रूप में हिन्दी जिस तरह पैर पसार रही है, उससे उसका वैश्विक भाषा बनने का सपना सच साबित हो रहा है। आज ऐसे सॉफ्टवेयर विकसित हो चुके हैं जिनसे हिन्दी तकनीकी दृष्टि से समृद्ध हो रही है। जाहिर है सामान्यजन से जुड़ने के लिए सूचना प्रौद्योगिकी को भी जनभाषा के सहयोग की अपेक्षा रहती है। 'व्हाट्सएप्प' के माध्यम से हिन्दी का प्रयोग बढ़ा है। 'ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी' हिन्दी शब्दों को सम्मिलित कर एक नया रिकॉर्ड बना चुकी है। प्रवासी भारतीयों ने प्रचुर मात्रा में साहित्य सृजन किया है। जिन पर शोध कार्य हुए हैं। हिन्दी की यह विशेषता है कि वह अपने आप को अवसर अनुकूल ढ़ालने में सक्षम है। देश और विदेश में निरंतर अग्रगामी तथा परंपरा और आधुनिकता के संवहन में सक्षम हिन्दी का वर्तमान जब रहना उल्लासपूर्ण है तब उसका भविष्य भी उज्जवल ही रहेगा।

वस्तुतः हिन्दी के बढ़ते संसार में अनेक विरोधों के बावजूद भी अपनी आंतरिक शक्ति से हिन्दी विश्व में हरी–घास की भांति धीरे–धीरे फैल रही है। वह दिन दूर नहीं है कि हिन्दू संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा अवश्यमेव बनकर रहेगी। उसकी संभावनाओं और चुनौतियों के विषय में चिंतन करते हुए यही कहा जा सकता है कि भारतीयों को अपनी अस्मिता, स्वाभिमान और विश्व में राष्ट्र गौरव की वृद्धि के लिए हिन्दी के विकास और विस्तार को अधिकाधिक प्रोत्साहन प्रदान करने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि हिन्दी भाषा धीरे–धीरे भारत से निकलकर सम्पूर्ण विश्व में हरि दूर्वादल की भाँति धीरे–धीरे फैल रही है। विश्व के लगभग सभी देशों में शनैः–शनैः अनेक प्रकार के माध्यमों से अपनी पहुँच बढ़ा रही है। फिल्म जगत, बाजार, खेल आदि अनेक माध्यमों से हिन्दी अपने पाँव पसार रही है। कम्प्यूटर जैसे विषयों में भी हिन्दी का प्रयोग उसके विकास का घोतक है। प्रवासी भारतीयों का हिन्दी के प्रसार–प्रचार में बहुत बड़ा योगदान है। हिन्दी और संस्कृत भाषा में विशाल साहित्य और उसका विशाल ज्ञान भंडार होने के कारण भी विश्व ज्ञानार्जन की दृष्टि से हिन्दी सीख रहा है। शिक्षा के उच्च शिक्षण संस्थानों, विश्वविद्यालय आदि में हिन्दी का बढ़ता प्रयोग विश्व में हिन्दी की स्थिति को दर्शाता है। विदेशों में हिन्दी भाषा के अलग से विभाग बनना हिन्दी भाषा के विकास को प्रदर्शित करता है। और वह दिन दूर नहीं है जब हिन्दी भाषा विश्व की अन्य भाषाओं का नेतृत्व करेगी। विश्व की अन्य भाषाएं बोलने वाले लोग हिन्दी भाषा को

निस्संदेह अपनाने लगे हैं कि लेकिन वे हिन्दी प्रेमियों, वह दिन भी बहुत निकट है जब विश्व के जन–जन की भाषा हिन्दी होगी और भारत की इस भाषा का विश्व की भाषाओं पर परचम लहराएगा।[5]

संदर्भ

[1]. सम्पा. डॉ. महेश 'दिवाकर', हिन्दी की विश्व यात्रा और सांस्कृतिक प्रदूषण, विश्व पुस्तक प्रकाशन नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष 2021 पृ. 19
[2]. सम्पा. डॉ. महेश 'दिवाकर', हिन्दी की वैश्विक प्रासंगिकता संदर्भ और सामर्थ्य, विश्व पुस्तक प्रकाशन नई दिल्ली,प्रकाशन वर्ष 2019 पृ. 35–36
[3]. सम्पा. डॉ. महेश 'दिवाकर', हिन्दी की वैश्विक प्रासंगिकता संदर्भ और सामर्थ्य, विश्व पुस्तक प्रकाशन नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष 2019 पृ. 48–49
[4]. सम्पा. डॉ. महेश 'दिवाकर', हिन्दी का वैश्विक परिदृश्य–विश्व पुस्तक प्रकाशन नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष 2013, पृ 153–155
[5]. सम्पा. डॉ. महेश 'दिवाकर', हिन्दी की विश्व यात्रा और सांस्कृतिक प्रदूषण, विश्व पुस्तक प्रकाशन नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष 2021 पृ. 53–55